THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-01 | April-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.24

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

मोना[1], डॉ. योगेश्वर प्रसाद शर्मा[2]
[1]शोधर्थिनी, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला
[2]प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला

सारांश

यह शोध "व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन" आधुनिक शिक्षा प्रणाली की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को रेखांकित करता है। वर्तमान वैश्विक एवं प्रतिस्पर्धात्मक युग में यह स्पष्ट हो चुका है कि केवल बौद्धिक क्षमता ही सफलता का निर्धारक नहीं है, बल्कि संवेगात्मक बुद्धि भी उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके माध्यम से वह अपने तथा दूसरों के भावों को समझता, नियंत्रित करता और सामाजिक परिस्थितियों में संतुलित व्यवहार करता है। प्रस्तुत अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि व्यावसायिक (जैसे इंजीनियरिंग, चिकित्सा, प्रबंधन आदि) तथा गैर–व्यावसायिक (जैसे कला, विज्ञान, वाणिज्य) पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में किस प्रकार का अंतर पाया जाता है। अध्ययन के लिए मेरठ शहर के 600 विद्यार्थियों को नमूने के रूप में चयनित किया गया तथा सुषमा तालेशारा द्वारा निर्मित प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया। शोध के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण में प्राप्त 'क्रान्तिक अनुपात' मान .05 स्तर पर सार्थक पाए गए, जिससे शून्य परिकल्पनाएँ अस्वीकार हो गईं और यह सिद्ध हुआ कि दोनों समूहों के बीच संवेगात्मक बुद्धि में वास्तविक अंतर विद्यमान है। इसके पीछे प्रमुख कारण व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का प्रतिस्पर्धात्मक एवं व्यावहारिक वातावरण माना जा सकता है, जहाँ विद्यार्थियों को समय प्रबंधन, तनाव सहनशीलता, निर्णय क्षमता तथा सामाजिक कौशलों का निरंतर अभ्यास करना पड़ता है। इसके विपरीत, गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत कम दबावपूर्ण होते हैं और उनमें सैद्धांतिक ज्ञान एवं रचनात्मकता पर अधिक बल दिया जाता है। अध्ययन का महत्व इस दृष्टि से भी है कि यह शिक्षकों, अभिभावकों एवं नीति–निर्माताओं को यह संकेत देता है कि विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए भावनात्मक कौशलों का विकास अत्यंत आवश्यक है। साथ ही, यह शोध मानसिक स्वास्थ्य, तनाव प्रबंधन एवं व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा प्रणाली में संवेगात्मक बुद्धि को समुचित स्थान देकर विद्यार्थियों को न केवल शैक्षणिक रूप से सक्षम बनाया जा सकता है, बल्कि उन्हें जीवन की विविध चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने हेतु भी तैयार किया जा सकता है।

मुख्यशब्द– व्यावसायिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थी, गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थी, संवेगात्मक बुद्धि

प्रस्तावना

आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न रहकर व्यक्तित्व के समग्र विकास का प्रमुख साधन बन गई है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीकी युग में व्यक्ति की सफलता केवल उसकी बौद्धिक क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसकी संवेगात्मक बुद्धि भी उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संवेगात्मक बुद्धि का आशय उस क्षमता से है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने तथा दूसरों के भावों को पहचानता है, उन्हें समझता है, नियंत्रित करता है और सामाजिक परिस्थितियों में उचित ढंग से अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय–क्षमता, सामाजिक समायोजन और व्यावसायिक सफलता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। शिक्षा के क्षेत्र में भी इसका विशेष महत्व है, क्योंकि विद्यार्थी जीवन वह अवस्था है जहाँ व्यक्ति के भावनात्मक, सामाजिक और बौद्धिक विकास की नींव रखी जाती है। वर्तमान समय में उच्च शिक्षा में विविध प्रकार के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं, जिनमें प्रमुख रूप से व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रम सम्मिलित हैं। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का उद्देश्य विद्यार्थियों को किसी विशेष व्यवसाय या करियर के लिए तैयार करना होता है, जैसे इंजीनियरिंग, चिकित्सा, प्रबंधन, विधि आदि, जबकि गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का उद्देश्य व्यापक ज्ञान, बौद्धिक विकास एवं शैक्षिक अनुसंधान की ओर उन्मुख करना होता है, जैसे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य के सामान्य पाठ्यक्रम। इन दोनों प्रकार के पाठ्यक्रमों की प्रकृति, उद्देश्य, अध्ययन वातावरण, शिक्षण पद्धति तथा अपेक्षाएँ एक–दूसरे से भिन्न होती हैं, जिसका प्रभाव विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर भी पड़ सकता है। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थी प्रायः अधिक प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में रहते हैं, जहाँ समय प्रबंधन, दबाव सहन करने की क्षमता, त्वरित निर्णय–क्षमता तथा व्यावहारिक कौशलों का विकास आवश्यक होता है। ऐसे वातावरण में विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के भावनात्मक दबावों, जैसे परीक्षा का तनाव, करियर की चिंता, प्रदर्शन की अपेक्षाएँ तथा सामाजिक तुलना का सामना करना पड़ता है। इन परिस्थितियों में उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी अपने भावों को बेहतर ढंग से नियंत्रित कर पाते हैं और तनावपूर्ण परिस्थितियों में भी संतुलित व्यवहार बनाए रखते हैं। इसके विपरीत, गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का वातावरण अपेक्षाकृत कम दबावपूर्ण होता है, जहाँ रचनात्मकता, चिंतनशीलता, स्वतंत्र अभिव्यक्ति तथा ज्ञान के विस्तार पर अधिक बल दिया जाता है। इस प्रकार के वातावरण में विद्यार्थियों को अपने भावों को व्यक्त करने के अधिक अवसर मिलते हैं, जिससे उनकी संवेगात्मक संवेदनशीलता एवं सामाजिक समझ का विकास हो सकता है। अतः यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है कि क्या व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर पाया जाता है, और यदि हाँ, तो इसके पीछे कौन–कौन से कारक उत्तरदायी हैं। संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयाम, जैसे आत्म–जागरूकता, आत्म–नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति तथा सामाजिक कौशल इस संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थी जहाँ आत्म–नियमन एवं लक्ष्य–उन्मुखता में अधिक दक्ष हो सकते हैं, वहीं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थी सहानुभूति एवं सामाजिक संबंधों में अधिक प्रवीण हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक परिवेश, शिक्षण संस्थान का वातावरण, सहपाठियों का प्रभाव तथा व्यक्तिगत अनुभव भी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के विकास को प्रभावित करते हैं। आज के समय में जब मानसिक स्वास्थ्य, तनाव प्रबंधन एवं भावनात्मक संतुलन की समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं, तब विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। यह अध्ययन न केवल विद्यार्थियों की भावनात्मक स्थिति को समझने में सहायक होता है, बल्कि शिक्षकों, अभिभावकों एवं

नीति–निर्माताओं को भी यह दिशा प्रदान करता है कि वे किस प्रकार ऐसे शैक्षिक वातावरण का निर्माण करें जो विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करे। व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन इस दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि इससे यह ज्ञात किया जा सकता है कि कौन–सा शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास के लिए अधिक अनुकूल है तथा किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त यह अध्ययन यह भी स्पष्ट कर सकता है कि क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास को पर्याप्त महत्व दे रही है या नहीं। यदि किसी एक वर्ग के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया जाता है, तो उसके कारणों का विश्लेषण कर उपयुक्त हस्तक्षेप कार्यक्रम तैयार किए जा सकते हैं, जैसे जीवन कौशल शिक्षा, परामर्श सेवाएँ, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ आदि। इस प्रकार यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक सुधार लाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन वर्तमान समय की एक महत्वपूर्ण शैक्षिक आवश्यकता है, जो न केवल विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास को समझने में सहायक है, बल्कि उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्षम बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आवश्यकता एवं महत्व

व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में अत्यंत प्रासंगिक एवं आवश्यक विषय के रूप में उभरकर सामने आया है। आज के वैश्वीकरण, प्रतिस्पर्धा तथा तकनीकी उन्नति के युग में केवल बौद्धिक क्षमता ही सफलता का एकमात्र आधार नहीं रह गया है, बल्कि संवेगात्मक बुद्धि भी उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संवेगात्मक बुद्धि वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने तथा दूसरों के भावों को समझता है, उन्हें नियंत्रित करता है तथा सामाजिक परिस्थितियों में संतुलित व्यवहार करता है। इस दृष्टि से व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में नई अंतर्दृष्टियाँ प्रदान करता है।

इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि व्यावसायिक पाठ्यक्रम जैसे इंजीनियरिंग, चिकित्सा, प्रबंधन आदि छात्रों को विशेष कौशल, तकनीकी दक्षता एवं व्यावहारिक अनुभव प्रदान करते हैं, वहीं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रम जैसे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य सामान्य ज्ञान, सिद्धांतात्मक समझ एवं बौद्धिक विकास पर अधिक केंद्रित होते हैं। इन दोनों प्रकार के पाठ्यक्रमों की प्रकृति में अंतर होने के कारण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, व्यवहार तथा भावनात्मक परिपक्वता में भी भिन्नता देखी जा सकती है। अतः यह जानना आवश्यक हो जाता है कि इन दोनों वर्गों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में किस प्रकार का अंतर पाया जाता है और इसके पीछे कौन–कौन से कारक कार्य करते हैं।

इस विषय का महत्व इस तथ्य से भी स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में रोजगार के क्षेत्र में केवल शैक्षणिक योग्यता ही नहीं, बल्कि व्यक्तित्व, टीम वर्क, नेतृत्व क्षमता, तनाव प्रबंधन एवं निर्णय लेने की क्षमता को भी अत्यधिक महत्व दिया जाता है। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थी प्रायः प्रायोगिक कार्य, इंटर्नशिप, समूह कार्य तथा वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान में संलग्न रहते हैं, जिससे उनकी संवेगात्मक बुद्धि का विकास अधिक होने की संभावना रहती है। इसके विपरीत गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थी अधिकतर सैद्धांतिक अध्ययन में संलग्न रहते हैं, जिससे उनके भावनात्मक विकास के अवसर अपेक्षाकृत कम हो सकते हैं। इस प्रकार यह अध्ययन यह समझने में सहायक होता है कि किस प्रकार का शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास को अधिक प्रभावित करता है।

©The Research Dialogue | Received: 01 April 2026 | Accepted: 05 April 2026 | Published: 15 April 2026

इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। इसके माध्यम से वे यह समझ सकते हैं कि विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए केवल पाठ्यक्रम आधारित ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि भावनात्मक एवं सामाजिक कौशलों का विकास भी आवश्यक है। यदि यह पाया जाता है कि किसी एक वर्ग के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का स्तर कम है, तो उनके लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम, परामर्श सेवाएँ एवं सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं। इससे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में संतुलन स्थापित किया जा सकता है।

इस अध्ययन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य से भी जुड़ा हुआ है। आज के समय में विद्यार्थियों में तनाव, अवसाद, चिंता आदि समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। संवेगात्मक बुद्धि इन समस्याओं से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह व्यक्ति को अपनी भावनाओं को समझने एवं नियंत्रित करने में सक्षम बनाती है। अतः यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि किस प्रकार के पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थी मानसिक रूप से अधिक सशक्त हैं और कौन–से समूह को अधिक मनोवैज्ञानिक सहायता की आवश्यकता है।

इसके साथ ही, यह अध्ययन समाज के विकास में भी योगदान देता है। संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति समाज में बेहतर संबंध स्थापित करता है, सहानुभूति प्रदर्शित करता है तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करता है। यदि शिक्षा प्रणाली में संवेगात्मक बुद्धि के विकास पर पर्याप्त ध्यान दिया जाए, तो समाज में सहयोग, सहिष्णुता एवं समरसता की भावना को बढ़ावा मिल सकता है। इस दृष्टि से व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन सामाजिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अंततः, इस अध्ययन का महत्व नीति–निर्माताओं के लिए भी कम नहीं है। इसके निष्कर्षों के आधार पर वे शिक्षा प्रणाली में आवश्यक सुधार कर सकते हैं, जैसे कि पाठ्यक्रम में जीवन कौशल एवं भावनात्मक शिक्षा को शामिल करना, शिक्षण विधियों में परिवर्तन करना तथा विद्यार्थियों के लिए परामर्श एवं मार्गदर्शन सेवाओं को सुदृढ़ करना। इस प्रकार यह अध्ययन न केवल शैक्षणिक क्षेत्र में, बल्कि व्यावसायिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत विकास के सभी आयामों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक एवं गैर–व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन वर्तमान समय की एक अनिवार्य आवश्यकता है, जो शिक्षा के समग्र एवं संतुलित विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

जिशा, जी.आर. (2021) ने *उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक तनाव पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रभाव* पर अध्ययन किया। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक तनाव के स्तर के बीच संबंधों की जाँच करना है। परिणाम छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक तनाव के बीच एक नकारात्मक सार्थक सहसंबंध दर्शाते हैं। साथ ही, यह भी पाया गया कि लड़कों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता लड़कियों की तुलना में काफी अधिक है और उच्चतर माध्यमिक छात्रों का शैक्षणिक तनाव लिंग से प्रभावित नहीं होता है। वर्तमान अध्ययन ने साबित किया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता सबसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक चर है जो एक छात्र के भविष्य और शैक्षणिक प्रगति को निर्धारित करता है।

कुमारी, अंजलि एवं त्रिपाठी, रेखा (2022) ने अध्ययन का उद्देश्य स्कूली छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की सीमा की जाँच करना था। निष्कर्ष इस प्रकार हैं : (1) अधिकांश स्कूली छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता उच्च थी और (2) अधिकांश हिंदू और मुस्लिम स्कूली छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता उच्च थी और (3) अधिकांश छात्र और छात्राओं में भावनात्मक बुद्धिमत्ता उच्च थी और (4) कक्षा 10 और 12 के अधिकांश स्कूली छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता उच्च थी।

मैथ्यू, अबिया ग्रेस (2023) ने *मनोविज्ञान और गैर–मनोविज्ञान के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक तनाव* पर अध्ययन किया। वर्तमान अध्ययन का परिणाम भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक तनाव के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध का संकेत देता है। टी–परीक्षण के परिणाम दर्शाते हैं कि मनोविज्ञान और गैर–मनोविज्ञान के छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण अंतर है। इसके अलावा, मनोविज्ञान और गैर–मनोविज्ञान के छात्रों के बीच शैक्षणिक तनाव में भी महत्वपूर्ण अंतर है।

पाल, पूजा (2024) ने *मुर्शिदाबाद के एक चयनित कॉलेज में कॉलेज के छात्रों के बीच आत्म–सम्मान, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक प्रदर्शन* किया। अध्ययन की जनसंख्या सभी कॉलेज के छात्र थे। स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीकों का उपयोग करके 150 छात्रों का चयन किया गया था। प्रत्येक वर्ष के अनुसार स्तर बनाए गए थे, जिस पर छात्रों ने चयनित कॉलेज, मुर्शिदाबाद से बैचलर ऑफ आर्ट (पास कोर्स) डिग्री प्रोग्राम का अध्ययन किया था। अध्ययन के परिणाम से पता चला कि कॉलेज के छात्रों के आत्मसम्मान और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच एक सकारात्मक सहसंबंध भी दिखाया कॉलेज के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच अत्यधिक सकारात्मक सहसंबंध पाया गया, जो सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है।

जोशी, लक्ष्मी एवं रावत, रेणु (2025) ने उच्च प्राथमिक छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि उनके लिंग के संबंध में अध्ययन किया। इस शोध के लिए कुल 40 उच्च प्राथमिक छात्रों को चुना गया था। एक यादृच्छिक नमूनाकरण विधि का उपयोग करते हुए, शोधकर्ता ने उत्तराखंड के ऋषिकेश के श्यामपुर में शिवालिक पब्लिक स्कूल से 20 लड़कियों और 20 लड़कों का चयन किया। निष्कर्ष उच्च प्राथमिक छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं दर्शाते हैं।

समस्या कथन

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए प्रस्तुत शोध अध्ययन में मेरठ शहर के समस्त व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु मेरठ शहर के समस्त व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत 600 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

©The Research Dialogue | Received: 01 April 2026 | Accepted: 05 April 2026 | Published: 15 April 2026

उपकरण

- संवेगात्मक बुद्धि मापने हेतु – सुषमा तालेशारा द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परिभाषीकरण

तालिका संख्या – 1

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात मान

पाठ्यक्रम	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात मान (T-Value)	.05 सार्थकता, df = 298 पर निष्कर्ष
व्यावसायिक पाठ्यक्रम के छात्र	150	126.30	15.80	2.61	**Sigificance**
गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम के छात्र	150	121.50	16.40		

प्रदत्तों का विश्लेषण – उपरोक्त तालिका संख्या 1 में व्यवासायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् 150 छात्रों एवं गैर व्यवासिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् 150 छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 126.30 एवं 121.50 है, मानक विचलन क्रमशः 15.80 एवं 16.40 है तथा स्वतत्रांश 298 के .05 के सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का मान 2.61 पाया गया जो कि स्वतत्रांश 298 के .05 के सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 से अधिक है अर्थात मान सार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :– मान के सार्थक होने की स्थिति में शून्य परिकल्पना–H_{01} निरस्त की जाती है; जो कि यह इंगित करता है कि व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर विद्यमान है।

ग्राफ संख्या – 1

व्यावसायिक (150) एवं गैर व्यावसायिक (150) पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांकों के मध्यमान एवं मानक विचलन का दण्डारेख

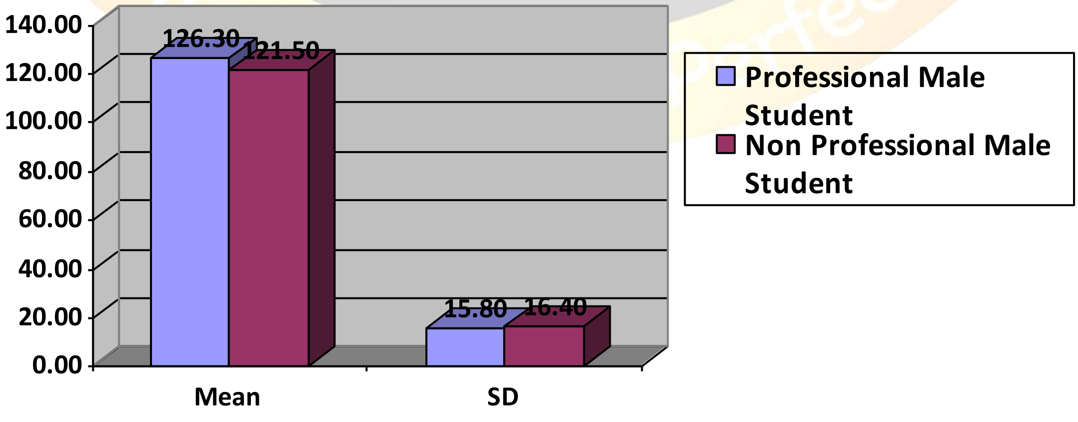

तालिका संख्या – 2

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात मान

पाठ्यक्रम	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात मान (T-Value)	.05 सार्थकता, df = 298 पर निष्कर्ष
व्यावसायिक पाठ्यक्रम की छात्राऐं	150	130.60	15.20	4.32	**Sigificance**
गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम की छात्राऐं	150	122.70	16.10		

प्रदत्तों का विश्लेषण – उपरोक्त तालिका संख्या 4.03 में व्यवासायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् 150 छात्राऐं एवं गैर व्यवासिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् 150 छात्राऐं की संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 130.60 एवं 122.70 है, मानक विचलन क्रमशः 15.20 एवं 16.10 है तथा स्वतत्रांश 298 के .05 के सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का मान 4.32 पाया गया जो कि स्वतत्रांश 298 के .05 के सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 से अधिक है अर्थात मान सार्थक है।

परिणाम की व्याख्या :– मान के सार्थक होने की स्थिति में शून्य परिकल्पना–H_{03} निरस्त की जाती है; जो कि यह इंगित करता है कि व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर विद्यमान है।

दण्डआरेख संख्या – 2

व्यावसायिक (150) एवं गैर व्यावसायिक (150) पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांकों के मध्यमान एवं मानक विचलन का दण्डारेख

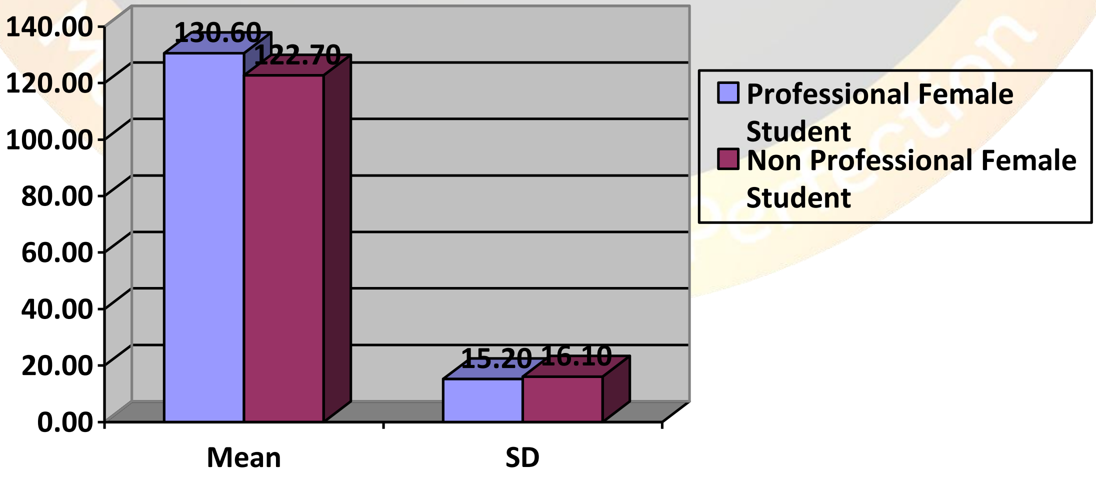

निष्कर्ष

1. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

©The Research Dialogue | Received: 01 April 2026 | Accepted: 05 April 2026 | Published: 15 April 2026

2. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- जिशा, जी.आर. (2021). उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक तनाव पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रभाव, शोध पत्र, DOI: 10.25215/0904.065
- मैथ्यू, अबिया ग्रेस (2023). मनोविज्ञान और गैर–मनोविज्ञान के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक तनाव पर अध्ययन, शोध पत्र, DOI: 10.25215/1103.361
- पाल, पूजा (2024) ने मुर्शिदाबाद के एक चयनित कॉलेज में कॉलेज के छात्रों के बीच आत्म–सम्मान, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक प्रदर्शन, शोध पत्र, DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v12.i9.2024.5744
- जोशी, लक्ष्मी एवं रावत, रेणु (2025). उच्च प्राथमिक छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि उनके लिंग के संबंध में अध्ययन, DOI: 10.25215/1301.110

Cite this Article:

मेना, शर्मा. डॉ. योगेश्वर प्रसाद, "व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp-211–218, Volume-05, Issue-01, April-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

मोना[1], डॉ. योगेश्वर प्रसाद शर्मा[2]

For publication of Research Paper title

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.24